

बहादुर आयरीन



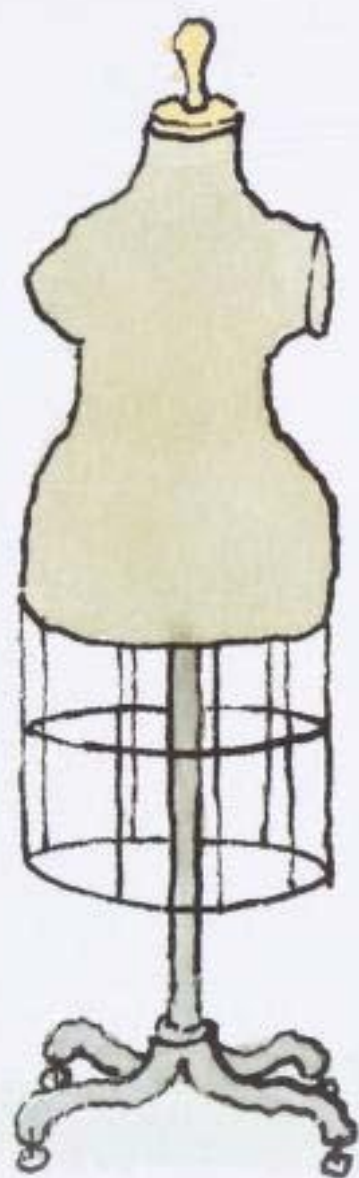
विलियम स्टिंग, हिंदी: विदूषक

बहादुर आयरीन

एक आर्टिस्ट और कहानीकार की हैसियत से **विलियम स्टिग** का अपना एक विशेष स्थान है. बच्चों के लिए उनकी क्लासिक किताबें **“अमोस एंड बोरिस” “द अमेजिंग बोन”** और **“डॉक्टर डी सोट्टो”** अपने में बेमिसाल हैं. विलियम स्टिग दुनिया का एक अलग नजरिया पेश करते हैं जो खुशियों और रोमांच से भरपूर है, वहाँ बुराईयों के साथ-साथ प्रकृति का प्रकोप भी राज करता है. सुन्दरता और जादू, ज़िन्दगी को विशेष बनाती है और उसे एक मायने देती है.

बहादुर आयरीन यहाँ पर आयरीन बोब्बिन है. तबियत खराब होने के कारण माँ रानी के लिए सिला चोगा, महल में जाकर नहीं दे सकती हैं. उस शाम, रानी को वो चोगा पहनना है. बहादुर आयरीन, चोगे को महल में ले जाकर देने की पेशकश करती है. पर उस समय बाहर भयंकर तूफ़ान है और बर्फ पड़ रही है. यह काम एक छोटी लड़की के लिए वाकई में बहुत मुश्किल होगा.

पर जहाँ चाह, वहाँ राह. बहादुर आयरीन अपने सामने आए तमाम खतरों का सामना करती है. इसके लिए उसे खुद को सर्द तेज़ हवा से बचाना होगा, तभी वो अपने मिशन में कामयाब हो पायेगी. **बहादुर आयरीन** बहुत से छोटे बच्चों के लिए एक रोल मॉडल बनेगी.



बहादुर आयरीन

विलियम स्टिग, हिंदी: विदूषक



मिस्सेस बोब्लिन पेशे से दर्जी थीं. वो बहुत थक गई थीं और उनके सिर में तेज़ दर्द हो रहा था. पर फिर भी उन्होंने बड़ी मेहनत से, रानी के चोगे के आखरी बटन सिले.

“यह तो दुनिया की सबसे खूबसूरत ड्रेस है!” उनकी बेटी आयरीन ने कहा.
“रानी को वो बेहद पसंद आएगी.”



“हाँ, रानी का यह चोगा देखने में वाकई बहुत सुन्दर है. आज रात की पार्टी में रानी उसे पहनेंगी. पर मेरी तबियत गिर रही है. मुझ में उस चोगे को महल तक ले जाने की ताकत नहीं बची है. मैं बीमार हूँ.”

“अरे माँ,” आयरीन ने कहा. “मैं उस चोगे को महल में ले जाकर दे आऊंगी!”

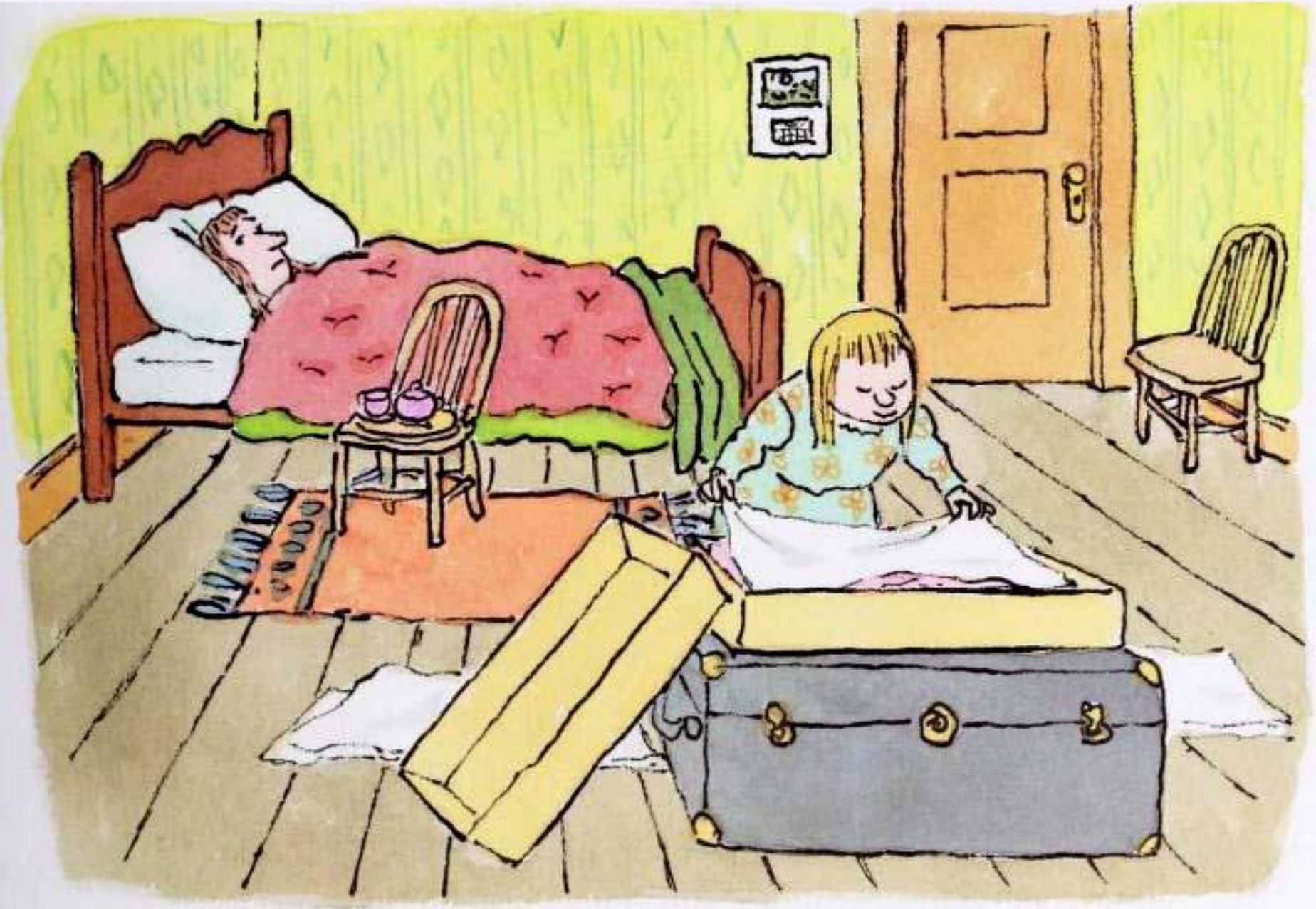
“नहीं बेटी, यह काम मैं तुम्हें नहीं करने दूँगी,” मिस्सेस बोबिन ने कहा.
“देखो इतने बड़े डिब्बे को मैं तुम्हें अकेले नहीं ले जाने दूँगी. और फिर महल यहाँ से बहुत दूर है. और अब तो बाहर बर्फ गिरना शुरू हो गई है.”



“पर बर्फ तो मुझे बहुत पसंद है,” आयरीन ने आग्रह करते हुए कहा. उसने ज़बरदस्ती करके अपनी माँ को पलंग पर लिटाया और उन्हें दो रजाइयों से ढंका. उसने माँ के पैरों पर एक और कम्बल ढंका. फिर उसने माँ के लिए नीम्बू-शहद की चाय बनाई. अंत में उसने अलाव में गर्मी के लिए कुछ और लकड़ियां डालीं.

उसके बाद आयरीन ने बहुत संभाल कर उस खूबसूरत चोगे को “डमी” से उतारा, और उसे टिशू पेपर में लपेटकर एक बड़े डिब्बे में सावधानी से रखा.

“देखो बेटा खूब सारे गर्म कपड़े पहनना,” माँ ने अपनी कमज़ोर आवाज़ में कहा, “ऊपर से अपनी जैकेट भी पहनना, क्योंकि बाहर बहुत ठंड और तेज़ हवा चल रही है.”



आयरीन ने ऊन की लाइनिंग वाले जूते, लाल टोपी, भारी कोट, मफलर और दस्ताने पहने. उसके बाद उसने माँ को छह बार माथे पर पुच्ची दी. उसने एक बार फिर देखा कि माँ आराम से तो लेटी थीं. उसके बाद वो बड़े डिब्बे को लेकर घर से बाहर निकली.



बाहर वाकई में बहुत ठंड थी, कड़क सर्दी थी. तेज़ हवा के झोंकों से सफ़ेद स्नो इधर-उधर बह रही थी. स्नो आयरीन के मुंह पर भी आकर गिरी. आयरीन पहाड़ी पर धीरे-धीरे ऊपर चढ़ी जहाँ पर किसान बनेट का चारागाह था.



वहां पहुँचने तक स्नो उसके घुटनों तक आ गयी और हवा और भी और मनहूस हो चली. हवा के झोंके उसे आगे धकेल रहे थे जिससे वो बार-बार गिर रही थी. आयरीन को यह बिल्कुल अच्छा नहीं लगा. उस भारी डिब्बे को उठाकर चलना अब उसके लिए मुश्किल हो गया. “ज़रा धीमे बहो!” उसने हवा को फटकारते हुए कहा और फिर वो कुछ देर सुस्ताने के लिए रुकी.



जब वो चारागाह के बीच में पहुंची, तब तक स्नो-फ्लेक्स और मोटे हो गए थे. अब पीछे से हवा उसे इतनी जोर से धक्का दे रही थी कि आयरीन को कूदना पड़ रहा था, जिसकी वजह से वो सीधी लाइन की बजाए बाएं-दायें डगमगाती हुई चल रही थी. कुछ देर बाद स्नो पिघलकर उसके जूतों के अन्दर घुस गई जिससे उसके पैर एकदम ठंडे और सुन्न हो गए. पर फिर भी वो चलती रही. क्योंकि उसे एक ज़रूरी काम जो करना था.



एप्पल रोड पहुँचते-पहुँचते हवा ने अपना तांडव नृत्य दिखाना शुरू किया. तेज़ हवा से पेड़ों की टहनियां टूटकर हवा में बहने लगीं. हवा के झोंकों से स्नो इधर-उधर छिटकने लगी. आयरीन के सामने इतनी स्नो इकट्ठी हो गई कि अब उसके लिए आगे बढ़ना मुश्किल हो गया. फिर आयरीन पीछे मुड़ी और झुकी.

“घर जाओ!” हवा चिल्लाई. “आयरीन घर वापिस जाओ...”

“मैं ऐसा कुछ भी नहीं करूंगी,” आयरीन ने कहा. “मैं ऐसा नहीं करूंगी, शैतान हवा!”

“घर जाओ!” दुबारा से हवा चिल्लाई. “घर वापिस जाओ...” हवा बरसी, “नहीं तो....” चंद क्षणों के लिए तो आयरीन सहमी. क्या उसे हवा की चेतावनियों पर ध्यान देना चाहिए? नहीं, वो रानी को चोगा ज़रूर पहुंचाएगी!



हवा ने आयरीन का डिब्बा छीनने, झपटने की बहुत कोशिश की. पर आयरीन डिब्बे को कसकर पकड़े रही और अपने कलेजे से चिपकाए रही. "देखो, इसे मेरी माँ ने बड़ी मेहनत से बनाया है!" वो चिल्लाई.

फिर भयानक हवा के एक तेज़ झोंके से डिब्बा, आयरीन के हाथों से छूट गया और स्नो में लुढ़कने लगा. आयरीन उसकी ओर तेज़ी से दौड़ी.





आयरीन ने कूदकर डिब्बे को पकड़ा पर इस बीच शैतान हवा ने डिब्बे को खोल दिया. फिर क्या था? टिशू पेपर के टुकड़े और रानी का चोगा हवा में उड़ने लगा.

आयरीन फिर भी डिब्बे को पकड़े रही और उस खूबसूरत चोगे को हवा में उड़ते और लुप्त होते देखती रही.



इतना बड़ा अन्याय भला कैसे हो सकता है? उसके आंसू उसकी पलकों में ही जम गए. उसकी माँ ने कितनी मेहनत की थी – कपड़ा नापना, काटना, पिनें लगाना, सिलना ... सब इस दिन के लिए? और बेचारी रानी! आयरीन ने सोचा वो अब वो खाली डिब्बे के साथ ही घर वापिस जाएगी और वहां खुद जाकर माँ को पूरी कहानी बताएगी.

वो फिर से स्नो पर चलने लगी. क्या माँ उसकी बात को समझ पाएंगी? उसने अचरज किया. क्या माँ समझेंगी कि वो आयरीन की नहीं, उस बेहूदा हवा की गलती थी? क्या रानी बहुत नाराज़ होंगी? हवा अभी भी किसी ज़ख्मी जानवर की आवाज़ जैसे कराह रही थी.



तभी आयरीन का पैर एक गड्ढे में फिसला और उसकी एड़ी मुड़ गई. आयरीन ने उसे भी हवा की हरकत माना. “चुप बैठो!” उसने हवा को फटकारते हुए कहा. “तुमने पहले ही मेरा बहुत नुकसान किया है. तुमने सब कुछ बरबाद कर डाला है, सब कुछ!” पर मदमस्त हवा आयरीन के शब्दों को निगल गई.

फिर आयरीन स्नो पर ही बैठ गई. उसे लगा कि अब उससे आगे और नहीं चला जायेगा. पर फिर कोशिश करके वो अपने पैरों पर खड़ी हुई और धीरे-धीरे आगे बढ़ी. मोच के कारण उसकी एड़ी में दर्द था. घर - जहाँ वो अपनी माँ के साथ सुरक्षित और गर्म रहती, वहाँ से अब बहुत दूर था. उसे लगा कि वहाँ से रानी का महल शायद ज्यादा पास हो. पर महल कहाँ था? किस ओर था? यह बताना बहुत मुश्किल था, क्योंकि स्नो से सब कुछ ढंका था.





फिर भी वो हिम्मती लड़की चलती रही. स्नो में चलने से उसके पीछे एक खाई बन रही थी. सर्दियों का छोटा दिन अब ढलने को आ रहा था.

क्या मैं सही रास्ते पर चल रही हूँ? उसने खुद से अचरज से पूछा. आसपास उसे सलाह देना वाला कोई नहीं था. अगर कोई इंसान होता भी, तो वो आयरीन से कहीं बहुत दूर अपने घर में सुरक्षित बैठा होता. यहाँ तक की जानवर तक अपने बिलों में जा छिपे थे. फिर भी आयरीन आगे बढ़ती रही.

जल्द ही अधेरा छाने लगा. अधेरे में भी आयरीन को स्नो गिरती हुई दिखी. वो स्नो को अपने चेहरे पर महसूस कर सकती थी. एक ठंडे वीरान इलाके में वो बिल्कुल अकेली थी. आयरीन अब खो गई थी.



जमने से बचने के लिए उसके लिए लगातार चलना ज़रूरी था. वो उम्मीद लगाये थी कि जल्द ही वो किसी घर के पास पहुंचेगी और घर के लोग उसे सुरक्षित अन्दर ले लेंगे. कोई उसे गले लगाये, उसकी देखभाल करे उसे अब इसकी बहुत सख्त ज़रूरत थी. स्नो अब उसके घुटनों के ऊपर आ चुकी थी. वो हाथ में खाली डिब्बा उठाए स्नो में रास्ता बनाते हुए आगे बढ़ती गई.

वो मन में सोच रही थी कि कोई छोटी लड़की भला इस तरह का संघर्ष कब तक झेल सकती थी. तभी उसे एक हल्की रोशनी नज़र आई. वो रोशनी, कहीं नीचे से आ रही थी.



वो उस रोशनी की ओर बढ़ी. जल्द ही उसे रोशनी से जगमगाती एक भव्य इमारत दिखाई दी. महल के सिवा भला वो भला और क्या हो सकता था?

आयरीन ने अपनी पूरी ताकत बटोरी और आगे बढ़ी और तभी वो - फिसली और धम्म से गिरी! वो कुछ ऊँचाई से नीचे गिरी इसलिए वो स्नो में दब गई. अब स्नो के ऊपर केवल उसका डिब्बा और हाथ नज़र आ रहे थे.



अगर वो मदद के लिए चीखती-चिल्लाती भी तो वो किसी को सुनाई नहीं देता. उसका शरीर कांपने लगा, और दांत किटकिटाने लगे. भगवान करे कि मैं यहीं दब कर मर जाऊं? तब सारी परेशानियां खत्म हो जाएँगी. क्यों? वैसे भी वो स्नो में पूरी तरह धंसी हुई थी.

अब शायद वो माँ का चेहरा दुबारा फिर कभी नहीं देख पाए? उसे अपनी माँ से हमेशा ताज़ी डबलरोटी की खुशबू आती थी? मरता क्या न करता! एक अंतिम बार आयरीन ने पूरा जोर लगाया और अपने शरीर को हिलाया. नतीजा यह हुआ कि वो स्नो में से बाहर निकलकर अपने घुटनों के बल बैठ पाई.



वहां से वो महल तक कैसे पहुंचे? जैसे ही उसने यह सवाल उठाया, उसे तुरंत उसका जवाब भी मिल गया.

उसने उस बड़े डिब्बे को स्नो पर रखा और फिर डिब्बे के ऊपर खुद बैठ गयी. पर उससे डिब्बा स्नो में और धंस गया. उसने कई बार कोशिश की, पर उसे कोई सफलता नहीं मिली. अंत में वो डिब्बे के ऊपर जोर से कूदी. उससे डिब्बा एक बर्फ-गाड़ी (स्लेज) जैसे, तेज़ी से, बर्फ पर आगे बढ़ने लगा.



हवा ने भी आयरीन का पीछा किया पर हवा फिसलती बर्फ-गाड़ी से रेस नहीं लगा पाई. कुछ ही क्षणों में आयरीन लोगों के बीच होगी और अलाव की गर्मी सेंक रही होगी. कुछ देर बाद बर्फ-गाड़ी रास्ते के पत्थरों के पास आकर रुकी.

अब रानी को हादसे की दुखद खबर बताने का समय आ गया था. फिर खाली डिब्बा उठाए आयरीन दुखी दिल, महल की ओर बढ़ी.

पर तभी उसके कदम रुक गए और मुंह खुला-का-खुला रह गया. कुछ देर वो बस टकटकी लगाये घूरती रही. क्या वो कोई सपना देख रही थी? जो उसने देखा वो उसे बिल्कुल नामुमकिन लगा. दायीं ओर के पेड़ से, रानी का खूबसूरत चोगा लटका था! वो बस हवा के जोर से, पेड़ से चिपका था.

“मामा!” आयरीन चिल्लाई. “मामा, मुझे वो मिल गया!”





हवा की तमाम हरकतों के बावजूद आयरीन ने पेड़ से चोगे को उतारा और फिर उसे मोड़कर डिब्बे में वापिस रखा. कुछ देर बाद वो महल के दरवाज़े पर मौजूद थी. उसने पीतल की सिकनी को दो बार जोर से खटखटाया. उसके बाद दरवाज़ा खुला और आयरीन तेज़ी से अन्दर घुसी.



महल में तमाम नौकरों ने और रानी ने खुद आयरीन का स्वागत किया. उन्हें यकीन नहीं हुआ कि कोई इस भयंकर तूफान में पहाड़ी चढ़कर अकेले आने की हिम्मत कर सकता था. फिर आयरीन ने पूरी कहानी विस्तार से सुनाई.

“अब आप मुझे घर भेजें,” आयरीन ने उनसे विनती की. वो अपनी बीमार माँ के पास तुरंत वापिस जाना चाहती थी. पर यह करना बिल्कुल असंभव था. अगले दिन सुबह से पहले सड़क की स्नो साफ़ ही नहीं होती.

“तुम फिर्क मत करो बेटी,” रानी ने आयरीन से कहा. “तुम्हारी माँ अब आराम से सो रही होंगी. कल सुबह तड़के ही हम तुम्हें घर छुड़वाने का काम करेंगे.”

आयरीन को अच्छा खाना खिलाया गया. उसके बाद उसने अलाव के पास बैठकर अपने कपड़े सुखाए. इस बीच में रानी ने अपने चोगे को प्रेस करवाया और उसे शाम की पार्टी के लिए पहना. कुछ ही देर में मेहमान आने लगे.





कितनी शानदार थी वो पार्टी! रानी उस खूबसूरत चोगे में आसमान के सितारे जैसी सुन्दर नज़र आ रही थीं. आयरीन भी अपनी साधारण पोशाक में चमक रही थी.



नाचते हुए मेहमानों ने आयरीन को बार-बार उठाया जिससे कि आयरीन की एड़ी न दुखे. आयरीन की माँ यह सब सुनकर बहुत खुश होती.

अगले दिन सुबह स्नो गिरना बंद हो गई. तब मिस्सेस बोल्बिन एक अच्छी नींद के बाद उठीं. रात के अच्छे आराम के बाद उनकी तबियत अब पहले से कहीं बेहतर थी. उन्होंने सबसे पहले अलाव जलाया. फिर वो आयरीन को ढूँढने उसके कमरे में गईं.



परन्तु आयरीन का पलंग एकदम खाली था! वो घबरा गईं! फिर वो दौड़ी-दौड़ी खिड़की के पास गईं जहाँ उन्हें सफ़ेद स्नो से लदी पहाड़ी दिखी. अभी भी स्नो एक पेड़ की टहनी से टपक रही थी.

“कहाँ गई मेरी बच्ची?” मिस्सेस बोबिन यह कह कर रone लगीं. फिर उन्होंने अपना कोट पहना और बाहर जाकर उसे तलाशने की सोची.

जब उन्होंने दरवाज़ा खोला तब तेज़ हवा उनसे आकर टकराई. पर तभी उन्हें सामने से एक बर्फ-गाड़ी आती दिखाई दी जिसे घोड़े खींच रहे थे. और बर्फ-गाड़ी के दो चालकों के बीच में आयरीन बैठी थी. वो सो रही थी पर उसके चेहरे पर मुस्कराहट थी.

क्या तुम आगे की कहानी सुनना चाहोगे?



उस बर्फ-गाड़ी में पीछे एक दाढ़ी वाला डॉक्टर भी बैठा था. रानी ने आयरीन की माँ के लिए एक जिंजर-केक, संतरे, अनानास और बहुत सी रंग-बिरंगी मिठाइयाँ भेजी थीं. रानी ने एक पत्र भी भेजा था जिसमें उन्होंने चोगे की बहुत तारीफ की थी, और आयरीन की बहादुरी के गुण गाए थे.



खैर वो गुण मिस्सेस बोब्बिन को, रानी से बेहतर पता था.

